B- III & IV
L- 04
Social Justice

भारत में विकास (Development in India)

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात....

भारत सरकार द्वारा सामाजिक न्याय से युक्त विकासित एवं आधुनिक भारत के निर्माण का लक्ष्य निर्धारित किया गया और इसे संविधान की प्रस्तावना में (सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक न्याय; प्रतिष्ठा एवं अवसर की समानता; समाजवाद और लोकतांत्रिक समाज के निर्माण का लक्ष्य) शामिल किया गया और इस लक्ष्य को प्राप्त करने की जिम्मेदारी राज्य को दी गई।

[अनु० 38, 38(2), 39 A), 41, 42, 43, 43(A) 45, 46, 47 आदि]

भारत राज्य द्वारा विभिन्न मंत्रालयों के गठन के साथ, संविधान एवं विधान (कानून) के माध्यम से मिश्रित मॉडल के तहत नियोजित विकास की प्रक्रिया शुरू की गयी और विभिन्न नीतियों एवं विभिन्न विकास कार्यक्रमों के माध्यम से सामाजिक न्याय से युक्त विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास शुरू किया गया।

इस दिशा में 1950 में योजना आयोग

का गठन किया गया और इस आयोग द्वारा, इस विकास के उद्देश्य के बारे में कहा गया कि -

एक ऐसी विकास की प्रक्रिया को धारण करना जो जीवन स्तर ऊँचा उठाए एवं सभी व्यक्तियों के लिए धनी बनने और विविधताओं से पूर्ण जीवन जीने के लिए नये अवसर प्रदान कर सके। अर्थात् सामाजिक न्याय से परिपूर्ण विकास।

भारत में विकास संबंधी दृष्टिकोण / विकास नीति की प्रवृत्ति :-

भारत में आजादी के बाद से लेकर आज तक, विकास नीति में कई परिवर्तन आये हैं; जिन्हें मुख्यतः 4 भागों में बांट कर देखा जा सकता है -

1. विकास की प्रथम अवस्था में - आजादी के बाद विकास प्रक्रिया में आर्थिक वृद्धि पर विशेष बल दिया गया और आजादी के बाद के वर्षों में इस तरह की नीति बनायी गयी जिसका मुख्य उद्देश्य आर्थिक वृद्धि लाना था,

क्योंकि यह माना गया कि - यदि एक बार आर्थिक वृद्धि की प्रक्रिया शुरू हो गयी

तो अदृश्य शक्तियों के द्वारा सामाजिक विकास एवं सामाजिक न्याय का लक्ष्य स्वतः प्राप्त हो जायेगा।

विकास के इस दृष्टिकोण को ट्रिकल डाउन थ्योरी कहा जाता है।

2. विकास की दूसरी अवस्था में - विकास नीति में इस बात पर जोर दिया गया कि केवल आर्थिक वृद्धि से विकास संभव नहीं है, इसलिए आर्थिक विकास के साथ-साथ सामाजिक संरचना में परिवर्तन लाना भी आवश्यक है क्योंकि पारम्परागत संस्कृति एवं संरचनाएं आधुनिक विकास की प्रक्रिया को बाधित करती हैं।

इसलिए विकास की इस नीति में संरचनात्मक आधुनिकीकरण पर विशेष बल दिया गया और इस दिशा में कई कार्यक्रम बनाए गए।

3. विकास की तीसरी अवस्था में विकास नीति में, इस बात पर चर्चा की गई कि आर्थिक वृद्धि एवं आधुनिकीकरण तो हो परन्तु मानवीय मूल्य भी उपेक्षित न हो

अर्थात विकास की इस प्रक्रिया में मानवीय पक्ष पर विशेष बल दिया गया और सामाजिक न्याय पर केन्द्रित अनेक विकास कार्यक्रम बनाए गए।

4. भारत में विकास की चौथी अवस्था को Reflexive stage के रूप में जाना जाता है, जहाँ पुनः विकास नीति में परिवर्तन दिखता है।

इस अवस्था में ऐसी विकास नीति के निर्माण पर बल दिया गया, जिसमें राष्ट्रीय के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय विकास को भी ध्यान में रखा जाए। जहाँ विकास की प्रक्रिया में मानवता को कोई खतरा न हो। अर्थात विकास को वैश्विक पैमाने पर मापा गया और अंतर्राष्ट्रीय मांगों के अनुरूप विकास नीति बनायी गयी, जिसमें सतत विकास एवं वित्त विकास पर बल दिया जा रहा है।

स्पष्ट है कि भारत में विकास नीति में समय-समय पर बदलाव होता रहा है, परंतु इन सभी नीतियों में एक बात सामान्य रही है; वह यह है कि,

विकास नीति के निर्माण में सामाजिक न्याय पर बल।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR